

सपनों के-से दिन

पाठ का संक्षिप्त परिचय

यह पाठ गुरुदयाल - सह की आत्मकथा का एक अंश है। यह एक ऐसी कथा है, जिसे भुला देना कठिन है। इस पाठ के स्मृति में बने रहने की जो अन्य वजह है, वह यह कि इसे पढ़ते हुए पाठक को बार-बार ऐसा लगता है कि जो दिनचर्या मेरी थी, जो शरारतें, चुहलबाज़ियाँ, आकांक्षाएँ, सपने मेरे थे, जो मैंने आज तक किसी को बताए भी नहीं, वे लेखक को कैसे मालूम हो गए और उसने बिना मुझसे मिले ही मेरी दैनंदिनी कैसे लिख डाली?

पाठ का सार

लेखक अपनी आत्मकथा के इस अंश में बताते हैं कि बचपन में जब वह और मेरे साथी खेला करते थे तो सभी एक जैसे लगते थे। नंगे पाँव, फटी मैली सी-कच्छी आरें टूटे बटनों वाले कई जगह से फटे उनके कुर्ते और बिखरे बाल। खेलते हुए इधर-उधर भागते-भागते वे गिर पड़ते जिससे पाँव छिल जाते थे। उनकी चोट देखकर माँ, बहनें तथा पिता उनकी पिटाई किया करते थे। इसके बावजूद भी वे बच्चे अगले दिन फिर खेलने निकल पड़ते। लेखक बचपन में यह सब नहीं समझ पाए था। जब अध्यापक की ट्रेनिंग में उन्होंने बाल-मनोविज्ञान विषय पढ़ा, तब उन्हें यह बात समझ में आई। सभी बच्चों की आदतें मिलती-जुलती थीं। उनमेंसे अधिकतर स्कूल नहीं जाते थे या फिर पढ़ने में रुचि न लेते थे। पढ़ाई का महत्व नहीं समझा जाता था। स्वयं माता-पिता भी पढ़ाने में रुचि नहीं लेते थे। वे उन्हें पंडित घनश्याम दास से लंडे पढ़वाकर मुनीमी सिखाने में ज़्यादा रुचि लेते थे। लेखक के आधे से ज़्यादा साथी राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए परिवारों से थे। उनकी

बोली कम समझ में आती थी। उनकी बोली पर हँसी भी आती थी पर खेलते समय कभी-कभी ये बोली समझ में आ जाती थी।

बचपन में लेखक को घास अधिक हरी और फूलों की सुगंध अधिक मनमोहक लगती थी। लेखक को अभी तक फूलों की सुगंध याद है। उन दिनों स्कूल में शुरू के साल में डेढ़ महीना पढ़ाई हुआ करती थी, फिर डेढ़-दो महीनों की छुट्टियाँ हो जाया करती थीं। लेखक हर साल माँ के साथ ननिहाल जाया करते थे। जिस साल ननिहाल न जा पाते थे, उस साल भी अपने घर से थोड़ा बाहर तालाब पर चले जाते। दूसरे बच्चे तालाब में कुदकर नहाते थे। कभी-कभी उनके मुँह में गंदा पानी चला जाता था। इस प्रकार छुट्टियाँ बीतने लगतीं। मास्टर्स की डाँट का डर बढ़ता चला जाता। मास्टर जी हिसाब के कम से कम दो सौ सवाल दिया करते थे। उनके करने का हिसाब लगाने लगते। उस समय दिन छोटे लगने लगते। स्कूल का डर सताने लगता। कुछ सहपाठी ऐसे भी थे जो काम करने से अच्छा मास्टर की पिटाई खाना उचित समझते थे। उनका नेता ओमा हुआ करता। उसके जैसा लड़का कोई नहीं था। उसका सिर हाँड़ी जितना बड़ा था। उसका सिर ऐसे लगता मानों बिल्ली के बच्चे के माथे पर तरबूज रखा हो। वह हाथ-पाँव से नहीं अपितु सिर से लड़ाई करता था। वह अपना सिर दूसरे के पेट या छाती में मारा करता था। सहपाठियों ने उसके सिर की टक्कर का नाम 'रेल-बम्बा' रखा हुआ था।

लेखक का स्कूल बहुत छोटा था। उसमें केवल नौ कमरे थे, जो अंग्रेज़ी के अक्षर एच की भाँति बने थे। पहला कमरा हेडमास्टर श्री मदनमोहन शर्मा जी का था। वे स्कूल की प्रेयर के समय बाहर आते थे। पी.टी. अध्यापक प्रीतम चंद लड़कों की कतारों का ध्यान रखते थे। वे बहुत कठोर थे और छात्रों की खाल खींचा करते थे। परंतु हेडमास्टर उसके बिल्कुल उलटे स्वभाव के थे। वे पाँचवीं और आठवीं कक्षा को अंग्रेज़ी पढ़ाते थे। वे कभी भी किसी छात्रा को मारते नहीं थे। केवल गुस्से में कभी-कभी गाल पर हलकी चपत लगा देते थे। कुछ छात्रों को छोड़कर बाकी सब रोते हुए ही स्कूल जाया करते थे। कभी-कभी स्कूल अच्छा भी लगता था जब पी.टी. टीचर कई रंगों की झंडियाँ

पकड़वाकर स्काउटिंग का अभ्यास करवाते थे। यदि हम ठीक से काम करते तो वे 'शाबाश' कह कर हमारा हौसला बढ़ाते थे।

लेखक को हर वर्ष अगली श्रेणी में प्रवेश करने पर पुरानी पुस्तकें मिल जाया करती थीं। हमारे हेडमास्टर एक धनाढ्य लड़के को उसके घर जाकर पढ़ाया करते थे। वह लड़का लेखक से एक श्रेणी आगे था। इसलिए उसकी पुस्तकें लेखक को मिल जाया करती थीं। उन्हीं पुस्तकों के कारण लेखक अपनी पढ़ाई जारी रख सका। बाकी सब चीज़ों पर साल का मात्र एक-दो रुपये खर्च हुआ करता था। उस समय एक रुपये में एक सेर घी और दो रुपये में एक मन गेहूँ मिल जाया करता था। इसी कारण, खाते-पीते घरों के लड़के ही स्कूल जाया करते थे। लेखक अपने परिवार में से स्कूल जाने वाला पहला लड़का था।

यह दूसरे विश्व-युद्ध का समय था। नाभा रियासत के राजा को अंग्रेज़ों ने सन 1923 में गिरफ्तार कर लिया था। तमिलनाडु में काडोएकेनाल में जंग शुरू होने से पहले उनका देहांत हो गया था। उनका बेटा विलायत में पढ़ रहा था। उन दिनों अंग्रेज़ फौज में भरती करने के लिए नौटंकी वालों को साथ लेकर गाँवों में जाया करते थे। वे फौज के सुखी जीवन का दृश्य प्रस्तुत करते थे ताकि नौजवान फौज में भरती हो जाएँ। जब लेखक स्काउटिंग की वर्दी पहन कर परेड करते, तब उनको भी ऐसा ही महसूस होता था।

लेखक ने मास्टर प्रीतमचंद को कभी मुसकराते हुए नहीं देखा। उनकी वेशभूषा सभी को भयभीत कर देती थी। उनसे सभी डरते थे और नफ़रत भी करते थे। वे बहुत कठिन सज़ा दिया करते थे। वह चौथी श्रेणी में फारसी पढ़ाते थे। एक बार एक शब्द रूप याद न कर पाने के कारण उन्होंने लड़कों को मुर्गा बना दिया था। जब हेडमास्टर शर्मा जी ने यह दृश्य देखा तो वे प्रीतम सिंह पर क्रोधित होकर बोले 'हवाट आर यू डूईंग, इज इट द वे टू पनिश द स्टूडेंट्स ऑफ़ फोर्थ क्लास? स्टाप इट एट वन्स।' शर्मा जी गुस्से में काँपते हुए अपने दफ़तर में चले गए। इस घटना के बाद प्रीतम सिंह कई दिनों तक स्कूल नहीं आए। शायद हेडमास्टर ने उन्हें मुअत्तल कर दिया था। अब फारसी शर्मा जी

स्वयं या मास्टर नाहै रिया राम जी पढ़ाने लगे थे। पी. टी. मास्टर अपने घर पर आराम करते रहते थे। उन्हें अपनी नौकरी की बिल्कुल भी चिंता नहीं थी। वे अपने पिंजरे में रखे दो तोतों को दिन में कई बार भीगे हुए बादाम खिलाते थे और उनसे मीठी-मीठी बातें करते रहते। यह सब लेखक तथा उनके साथियों को बड़ा विचित्र लगता था कि इतने कठोर पी.टी. मास्टर तोते के साथ इतनी मीठी बातें कैसे कर लेते हैं! ये सब बातें उनकी समझ से परे थीं। वे उन्हें अलौकिक मानते थे।

बोध प्रश्न

1. कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती- पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है?

उत्तर बचपन में लेखक के आधे से ज्यादा साथी राजस्थान या हरियाणा से थे जिनके साथ वे खेलते थे। सबकी बोलियाँ अलग-अलग थीं। वे एक-दूसरों की बोलियाँ काम ही समझ पाते परन्तु खेलते समय यह बात जरा भी महसूस नहीं होती। सब की भाषा सब समझ लेते थे। उनके व्यवहार में इससे कोई अंतर न आता था। पाठ के इस अंश द्वारा यह पता चलता है की कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती।

2. पीटी साहब की शाबाश फ़ौज के तमगों-सी क्यों लगती थी। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर पीटी साहब प्रीतमचन्द बहुत सख्त अध्यापक थे। यदि कोई कतार से सिर इधर-उधर हिला लेता या दूसरी पिंडली खुजलाने लगता इस पर वे उसे लड़के की ओर बाघ की तरह झपट पड़ते। परन्तु जब बच्चे कोई भी गलती न करते तो पी. टी. साहब उन्हें शाबाश कहते। बच्चे शाबाश शब्द सुनकर खुश होते और उन्हें लगता कि जैसे फौज में सिपाही को तमंगे दिए जाते हैं वैसा ही तमगा उन्हें भी मिल गया है।

3. नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था?

उत्तर नयी श्रेणी में जाने पर लेखक को हैडमास्टर जी एक अमीर घर के बच्चे की पुरानी किताबें लाकर देते थे। परन्तु इन नयी कापियों और पुरानी किताबों आती

विशेष गंध से लेखक का बालमन उदास कर जाती थीं क्योंकि नयी श्रेणी का मतलब और कठिन पढ़ाई और नए मास्टर्स से पिटाई का भय होता था। पुराने मास्टर्स की भी अपेक्षाएं बढ़ जाती थीं। उन्हें लगता था की नयी श्रेणी में आने से बच्चें तेज हो गए हैं और अपेक्षाओं की प्रति न होने पर वे चमड़ी उधरने में देर न लगाते।

4. स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्वपूर्ण आदमी फ़ौजी जवान क्यों समझने लगता था?

उत्तर स्काउट परेड में लेखक साफ़ सुथरे धोबी के घुले कपड़े, पॉलिश किए हुए बूट, जुराबों को पहन कर जब लेखक ठक-ठक करके चलता था तो वह अपने आपको फ़ौजी से कम नहीं समझता था। अकड़कर चलता तो अपने अंदर एक फ़ौजी जैसी आन-बान-शान महसूस करता था।

5. हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?

उत्तर एक दिन मास्टर प्रीतमचंद ने कक्षा में बच्चों को फ़ारसी के शब्द रूप याद करने के लिए दिए। परन्तु बच्चों से यह शब्द रूप याद नहीं हो सके। इसपर मास्टर जी ने उन्हें मुर्गा बना दिया। बच्चे इसे सहन नहीं कर पाए कुछ ही देर में लुढ़कने लगे। उसी समय नम्र हृदय हेडमास्टरजी वहाँ से निकले और बच्चों की हालत देखकर सहन नहीं कर पाए और पीटी मास्टर को मुअत्तल कर दिया।

6. लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

उत्तर लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल जाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था परन्तु जब स्कूल में रंग बिरंगे झंडे लेकर, गले में रुमाल बाँधकर मास्टर प्रीतमचंद परेड करवाते थे, तो लेखक को बहुत अच्छा लगता था। सब बच्चे ठक-ठक करते राइट टर्न, लेफ्ट टर्न या अवाउट टर्न करते और मास्टर जी उन्हें शाबाश कहते तो लेखक को पूरे साल में मिले गुड्डों से भी ज़्यादा अच्छा लगता था। इसी कारण लेखक को स्कूल जाना अच्छा लगने लगा।

7. लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति बहादुर बनने की कल्पना किया करता था?

उत्तर लेखक के स्कूल की छुट्टियाँ होती और उसमें जो काम करने के लिए मिलता उसे पूरा करने के लिए लेखक समय सारणी बनाता। कौन-सा काम, कितना काम एक दिन में पूरा करना है। लेकिन खेल कूद में लेखक का समय बीत जाता और काम न हो पाता। धीरे-धीरे समय बीतने लगता तो लेखक ओमा नामक ठिगने और बलिष्ठ लड़के जैसा बहादुर बनना चाहता था जो उद्दंड था और काम करने के बजाए पिटना सस्ता सौदा समझता था।

8. पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर पीटी सर शरीर से दुबले-पतले, ठिगने कद के थे, उनकी आँखें भूरी और तेज़ थीं। वे खाकी वर्दी और लम्बे जूते पहनते थे। वे बहुत अनुशासन प्रिय थे। बच्चे उनका कहना नहीं मानते तो वे दंड देते थे। वे कठोर स्वभाव के थे, उनके मन में दया भाव न था। बाल खींचना, ठुडके मारना, खाल खींचना उनकी आदत थी। इनके साथ वे स्वाभिमान भी थे। नौकरी से निकाले जाने पर वे हेडमास्टर जी के सामने गिड़गिड़ाए नहीं बल्कि चुपचाप चले गए।

9. विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर पाठ में अनुशासन रखने के लिए कठोर दंड, मार-पीठ जैसी युक्तियाँ अपनाई गई हैं परन्तु वर्तमान में यह निंदनीय माना गया है। आजकल अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जाता है कि वे बच्चों की भावनाओं को समझें, उनके कामों के कारण को समझें, उन्हें उनकी गलती का एहसास कराए तथा उनके साथ मित्रता व ममता का व्यवहार रखें। इससे बच्चे स्कूल जाने से डरेंगे नहीं बल्कि खुशी खुशी आएँगे

11. प्रायः अभिभावक बच्चों को खेल-कूद में ज़्यादा रुचि लेने पर रोकते हैं और समय बरबाद न करने की नसीहत देते हैं बताइए -

(क) खेल आपके लिए क्यों ज़रूरी हैं।

(ख) आप कौन से ऐसे नियम-कायदों को अपनाएँगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो।

उत्तर (क) खेल मनोरंजन के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद हैं। इससे शरीर स्वस्थ रहता है, बच्चे अनुशासित रहते हैं तथा प्रेम और सहयोग की भावना बढ़ती है। साथ ही साथ प्रतिस्पर्धा के गुण भी समझ में आते हैं। समूह में खेलने से सामाजिक भावना आती है।

(ख) खेल शरीर के लिए ज़रूरी हैं परन्तु उतने ही ज़रूरी अन्य कार्य भी हैं; जैसे – पढ़ाई आदि। यदि खेल स्वास्थ्य के लिए है तो पढ़ाई जैसे कार्य भविष्य को सुधारने के लिए आवश्यक हैं। हमें अपना कार्य समय पर करते रहना चाहिए। ज्ञानवर्धक विषयों पर भी उतना ही ध्यान देंगे और समय देंगे तो अभिभावकों को खेलने पर कोई आपत्ति नहीं होगी